वर्ष – 10, अंक–2
अंक : अक्टूबर – दिसंबर 2020
UGC-CARE LISTED S.N. - 61

मूल्य-100/-
ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श
डॉ. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

प्रचार-प्रसार
विजय कुमार सिंह

आवरण चित्र
तरुणेश्वर निखिल

ले-आउट
हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/- रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
बेवसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- **राकेश मिश्र की कविताओं पर विशेष सामग्री :** *डॉ. रमा* 3
- **कवि राकेश मिश्र की कविताएँ... :** *डॉ. दर्शन पाण्डेय* 8
- **राकेश मिश्र की चुनी हुई कविताएँ** 11
- **गांधीवादी दर्शन और बाणभट्ट... :** *प्रो. सत्यकेतु सांकृत* 13
- **मीडिया और साहित्य :** *सूर्यनाथ सिंह* 17
- **कहानी आलोचना के संदर्भ में पाठकीय... :** *पंकज शर्मा* 20
- **'विश्व संगीत के गॉड फादर', ... :** *डॉ. प्रकाश चन्द्र गिरि* 23
- **कहानी विधा के सापेक्ष आलोचना... :** *आनंद कुमार सिंह* 26
- **राही मासूम रजा और शानी : ... :** *डॉ. सुनील कुमार यादव* 28
- **कामायनी में सत्यं शिवं और सुंदरं... :** *डॉ. शोभा कौर* 31
- **बींसवी शताब्दी की कुछ महत्त्वपूर्ण ... :** *डॉ. मिथिलेश कुमारी* 34
- **मलयज के लिरिकल प्रोज़ का संसार... :** *डॉ. राकेश कुमार* 36
- **सूचना समाज के दौर में संवदिया :** *अनुपम कुमार* 39
- **संभावनाओं के आईने में दिल्ली ... :** *डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह* 41
- **एफएम चैनलों... :** *निखिल आनंद गिरि'-डॉ. सर्वेश दत्त त्रिपाठी* 44
- **भोजपुरी गीतों में प्रतिरोधी स्वर :** *डॉ. सोनी पाण्डेय* 47
- **हिंदी उपन्यासों में चित्रित उत्तराखंड... :** *जेनब खान* 49
- **प्रवासी साहित्य और नीना पॉल... :** *डॉ. आसिफ उमर* 52
- **'भाषाई पत्रकारिता और डिजिटल... :** *चंदन कुमार भारती* 55
- **स्वर से ईश्वर की खोज :** *डॉ. चंद्रकांत सिंह* 58
- **साहित्यिक विधाओं के अंतर्मिलन... :** *आनंद कुमार सिंह* 61
- **इंटरनेट के दौर में हिंदी :** *डॉ. गंगा सहाय मीणा-डॉ. अनुपमा पांडेय* 64
- **आप्रवासन परंपरा, प्रक्रिया और अवधारणा :** *नीलमणी भारती* 68
- **'कथेतर गद्य की दृष्टि से रेणु का रिपोर्ताज कर्म' :** *निशा गुप्ता* 71
- **हिंदी कविता में विश्व शांति का स्वरूप :** *डॉ. रामचरण पांडेय* 74
- **समकालीन उपन्यासों में ... :** *अमृता श्री* 77
- **लोकराग-आल्हा :** *डॉ. रश्मि शर्मा* 81

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच.-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।*

- **राजनीति, वेबसाइटों के विज्ञापन पर :** *सुरेश कुमार* 85
- **महिला सशक्तीकरण... :** *डॉ. चयनिका उनियाल पंडा* 90
- **हाशिए पर आदिवासी समाज... :** *उपमा शर्मा* 94
- **रेणु : मानव मुक्ति के सशक्त प्रहरी :** *बिद्या दास* 97
- **इक्कीसवीं सदी के हिंदी... :** *विजयलक्ष्मी पाण्डेय* 100
- **और गुलफ़ाम मारे गए! :** *डॉ. बिमलेंदु तीर्थंकर* 103
- **साहित्य पर बाजारीकरण :** *डॉ. कमलेश कुमार यादव* 107
- **लोकसाहित्य, समाज और... :** *डॉ. अलका आनंद* 110
- **रीतिकालीन काव्य में नायिका-... :** *रामप्यारी कुमारी* 112
- **फैंटेसी में झलकती आजाद... :** *अदिति झा* 115
- **जीवन मूल्य और संत... :** *डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा* 119
- **'राम की शक्तिपूजा' के रचना-... :** *मनीष* 123
- **हिंदी उपन्यासों में बाल... :** *डॉ. अमिता तिवारी* 125
- **मार्कण्डेय का कथा साहित्य... :** *प्रियंका यादव* 129
- **योगदर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण :** *रागिनी पाठक* 132
- **कि आती है उर्दू जुबां आते-आते :** *खुशबू* 135
- **आधुनिक संदर्भ में महापुरुष... :** *जैनेन्द्र चौहान* 139
- **स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी.... :** *डॉ. पठान रहीम खान* 141
- **आंचलिकता और रेणु :** *डॉ. आलोक प्रभात* 145
- **महिला सशक्तिकरण–भारत... :** *डॉ. संगीता शर्मा* 149
- **व्यक्तित्व, व्यक्तित्वशील ... :** *अमित कुमार दूबे* 154
- **नरेंद्र कोहली के 'युद्ध' उपन्यास... :** *डॉ. रेखा रानी* 157
- **संगीत शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी ... :** *डॉ. सुरेंद्र कुमार* 160
- **हिंदी का वैश्विक परिदृश्य... :** *संगीता कुमारी पासी* 163
- **आर्थिक रूप से उच्च एवं ... :** *डॉ. राजेश कुमार* 166
- **रेणु जी के 'मैला आँचल' में... :** *सिमरन भारती* 169
- **मार्कंडेय की... :** *सत्य प्रकाश-डॉ. अनुभा पाण्डेय* 172
- **कतिपय वर्तमान हिंदी... :** *डॉ. रणजीत कुमार* 176
- **बड़ो जनजाति : समाज... :** *डॉ. प्रीति बैश्य* 180
- **'अंधविश्वास की... :** *डॉ. सुनील कुमार सिंह* 184
- **साहित्य और सत्ता :** *अंकिता चौहान* 187
- **विवाहितों के प्रेम... :** *डॉ. विजय शंकर मिश्र* 192
- **सुशीला टाकभौरे की ... :** *राजा कुमार* 196
- **जयनंदन और उनकी... :** *डॉ. गोपाल प्रसाद* 199
- **वेब सीरीज : पारंपरिक सिनेमा... :** *प्रभांशु ओझा* 202
- **अनामिका का वैचारिक... :** *ज्ञान प्रकाश* 205
- **प्रेमचंद की कहानियों में... :** *सुनील यादव* 207
- **वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में... :** *डॉ. राम भरोसे* 210
- **तकनीक वर्चस्विता और... :** *डॉ. प्रकाश कोपार्डे* 214
- **मीडिया का नया परिदृश्य... :** *डॉ. अंजली कायस्था* 218
- **कवि सहचरीशरण द्वारा रचित... :** *डॉ. पवन सचदेवा* 222
- **समकालीन महिला ... :** *डॉ. रूचिरा ढींगरा* 226
- **सत्यं शिवमं सुंदरमं का... :** *डॉ. मंजुला* 230
- **वृंदावनलाल वर्मा की ... :** *डॉ. विजय शंकर मिश्र* 233
- **नवजागरण के दौर में निबंध लेखन :** *प्रीति हुड्डा* 236
- **हिंदी नाटकों में गांधी :** *डॉ. आशा-डॉ. अनिल शर्मा* 239
- **अंतरराष्ट्रीय फलक पर... :** *प्रियंका विश्नोई* 243
- **लोक मिट्टी में सने ... :** *डॉ. सुनील कुमार सुधांशु* 246

राकेश मिश्र की कविताएँ : भावनाओं का बहुरंगी कोलाज

डॉ. रमा

इधर के कुछ वर्षों में जिस तरह की कविताएँ लिखी जा रही हैं उनमें जिस तरह की सपाटबयानी और खुरदरापन आया है उससे कविता का तत्व मर गया है। राकेश मिश्र की कविताओं में सपाटबयानी के साथ कविता में जो लय, ताल, भावबोध और भावनात्मक आवेग होना चाहिए वह भरपूर मात्रा में है। यह कविताओं को पढ़ने के बाद रख देने वाला काव्य संग्रह तो नहीं है। यह कविताएँ पढ़ते समय भी और उसके बाद भी कचोटती हैं। खुद से संवाद करने के लिए आमंत्रित करती हैं। पूरी कविता को देखते हुए जो मैं महसूस करती हूँ वो ये कि, कवि जीवन, जीवनमूल्य, अपने आप-पास के परिवेश, उस परिवेश में रचे-बसे समाज और भौतिकतावादी होते लोगों का विकृत होना आदि दिखता है।

कवि जानता है प्रकृति जो देती है एक दिन ले लेती है। समय के साथ सुख-दुःख के रंग रूप बदल जाते हैं इसलिए वह लिखता है–

''हमने देखा है / बादल छँट जाते हैं / वेदना मद्धिम पड़ जाती है। समय कम हो जाता है। देखा है हमने / मूल्यों के साथ छूट जाता है

थोड़ी ही दूरी में व्यक्ति खो जाता है। भीड़ में।''

इस कविता में कथातत्व है, लेकिन इसकी भावना काव्यात्मक है। आज हम व्हॉट्स एप, ईमेल, फेसबुक और ट्यूटर में उलझे हुए हैं। यह हमारी जीवनशैली का हिस्सा हैं, इनसे हम भाग नहीं सकते। लेकिन राकेश मिश्र इस भागमभाग में भी शब्दों के महसूसने का सुख बचाए रखना चाहते हैं। इसलिए वह एक चिट्ठी लिखते हैं–

''आज फिर लिखी चिट्ठी/ घर/ प्रणाम से शुभ तक/ फैल गई पोर भर जरूरत/ पूर्ण विराम।''

इस कविता के दो अंतरे और हैं। जिसमें वह प्रणाम से पूर्णविराम की यात्रा करते हुए उसपर पता लिखने का सुख भोगते हैं यह तकनीकी माध्यमों में तो संभव नहीं है।

मनुष्य यह जानते हुए भी कि यह जीवन क्षणभंगुर है। इसके साथ कोई एग्रीमेंट नहीं है। फिर भी उससे बहुत सारी उम्मीदें पाल लेता है। राकेश मिश्र जीवन की इस सच्चाई को जानते हैं और उससे बड़ी बात कि मानते भी हैं। वह ये भी जानते हैं कि जिंदगी का मूल ही है साथ छोड़ना, इसलिए वह उसे बहुत चाहते हुए भी उसकी मूल प्रवृत्ति पर कोई भरोसा नहीं जाताना चाहते हैं–

''बहुत चाहता हूँ मैं/ तुमको जिंदगी/ पर देखो–/ जब मैं बहुत चाहता हूँ तुमको/ तब जिंदगी, जिंदगी नहीं रहती।

बड़ा कवि वही होता है जो वर्तमान की आँखों से भविष्य का स्वप्न देखता है। तत्कालीन विकृतियों से लड़कर उसे भविष्य के लिए सुंदर बनाता है या बनाने का संदेश देता है। आज के समय में हमारे जीवन को रिमोड संचालित करता है। हमारी भावनाएँ भी रिमोड हो चुकी हैं। एक जगह ठहरती ही नहीं हैं। हमेशा बेहतर की तलाश में कभी किसी चीज को पूर्णता में हम पाते ही नहीं। रिमोड सब जानता है हमें क्या चाहिए। यह राकेश मिश्र भी जानते हैं–

''अंतर्यामी है रिमोट/ जो बदल रहे हैं दिशाएँ/ माथे के पसीने की।''

कवि जब कोई बड़ा विजन लेकर चलता है तो उसकी कविता का फलक अपने आप बड़ा हो जाता है। कई बार वह कविता दर्शन में बदल जाती है। कवि जिस विचार को ध्यान में रखकर कविता लिखता वह उस विचार की सीमाओं को पार कर एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर देती है जो संभावित न होकर भी जीवन का हिस्सा बन जाती है। ऐसी ही कविता देखें–

''आज मैं ये समझ चला हूँ कि/ मैंने परछाइयों से प्रेम किया है। जो सारा दिन/ समझौता करने की कोशिश में/सूरज से/ बड़ी छोटी और बड़ी होती जाती हैं।

हम जिस भौतिकतावादी युग में जी रहे हैं उसमें वस्तु की बाहरी सत्ता ही दिखती है उसके रूप, रंग, गंध की धमक खत्म हो चुकी है। इस बाजारी युग में वस्तुओं का आतंरिक सौंदर्य भी बाजारू हो गया है, लेकिन राकेश मिश्र उस आंतरिक संवेदना तक पहुँचते हैं। उसे महसूस करते हैं–''धूप में कितने रंग/ हमें क्या मालूम/ हमें सरोकार है / तपन से।''

शहरों की तरफ बढ़ती आबादी और उस आबादी को प्रश्रय देने के लिए उगते कंक्रीट के जंगल महानगर के सौंदर्यबोध को तो विकृत कर ही रहे हैं उसके दीवारों

रहने वाले वाले लोगों के अंदर जीवन का ताप खत्म हो चुका है। रोटियों के साथ धुआँ पीया जा रहा है–

''शहर में कंक्रीट की दीवारों पर/ लोहे की जालियों के पीछे/ चस्पा होती जब/ नंबरों की एक संक्षिप्त फेहरिस्त/ शहर के ढाबों, होटलों, कमरों में/ चबाई जाती हैं रोटियाँ/ सिगरेटों के साथ।''

राकेश मिश्र की कविताओं का शिल्प कविता का कद बढ़ा देता है। उनकी कविताओं में शिल्प को लेकर कोई सायास प्रयास नहीं है लेकिन भावनाओं का आवेग कविता को लय में बांध देता है। वह छोटी सी बात में बड़ा बिम्ब खड़ा करते हैं–

''शाम/ सामूहिक प्रार्थना के स्वरों में/ इंतजार है। परछाइयों का।''

एक ऐसी ही कविता और देखें–''हँसी/ कनपटी पर दो बूंद पसीने की तरह/ उड़ जाती है। हवा में।''

कविता को भाषा की बहुत ज्यादा जरूरत नहीं होती। यह तो भावना का उद्‌गम है। राकेश मिश्र शब्दों को लिखने से पहले जीते हैं। उस जीते हुए पलों में वह कविता करते हैं। यह ठीक है कि कविता के लिए भाषा के नियम बहुत ज्यादा मायने नहीं रखते फिर कवि उसका निर्वाह कर ले तो कविता का फलक और विस्तार पा जाता है। देखिए ऐसी ही एक कविता–

''टूटते तारे की भी/ एक लंबी यात्रा होती है। सूखे नदी का भी/ एक मानसूनी अतीत होता है। सूखे पीपल ने भी/ देखी है चौपालें/टूटे रिश्तों की भी/ एक अहमियत होती है। छूटे दोस्तों की भी/ दुआएँ साथ रहती हैं/ जीना होगा, खुश रहना होगा।''

'जिंदगी एक कण है' : जिंदगी के कोलाज पर अनुभव का रंग है। आनंद के क्षणों में कविता का सृजन जरा कठिन है। उनके तीनों काव्य संग्रह मेरे कमरे में रखी किताबों के बीच में बैठे मुझे देखते रहते हैं, जैसे कि बातचीत के लिए आमंत्रित कर रहे हों। कल शाम आखिर श्जिंदगी एक कण है' उठा ही ली। शाम को घर जाते समय पढ़ भी गई। अब लिखने में दिक्कत ये होती है कि पहले अच्छी भावबोध वाली कविताओं को चुनना होता है। ईमानदारी से कहूँ तो यह पहला काव्य संग्रह है जिनमें से अच्छी कविताओं का चुनाव मेरे लिए चुनौती बन गई। मैं सच कहूँ तो कविताएँ कम पढ़ती हूँ, क्योंकि इधर जिस तरह से लंबी कविताएँ लिखने का फैशन शुरू हुआ है उसमें न तो तारतम्यता होती हैं न ही भावनात्मक प्रभाव। लगता है कोई लंबी लघुकथा पढ़ रही हूँ। छंद, लय, ताल तो बहुत दूर, रस का नितांत आभाव आजकल की कविताओं में देखने को मिलता है। ऐसे में जब यह संग्रह मैंने उठाया तो चकित हुई, मात्र एक घंटे में संग्रह खत्म कर चुकी थी। एक वाक्य में कहूँ तो '' 'जिंदगी एक कण है' की कविताएँ समय के कैनवास पर प्रेम के रंग से जिंदगी का ऐसा चित्र बनाती हैं, जिसमें सबके लिए कोई न कोई रंग मौजूद है।'' कविताएँ छोटी होकर भी भावनाओं के अंतस्थल तक उतर जाती हैं। मन, बुद्धि और हृदय की यात्रा एक साथ करती हैं। कुछ कविताएँ तो दो-तीन पंक्ति की हैं, लेकिन उनके अंदर जो दुनिया है, उसकी व्याख्या असीमित है। राकेश मिश्र की कविताएँ यह विश्वास दिलाती हैं कि, इस क्रूरतम समय और जिंदगी के रणक्षेत्र में प्रेम की विजय निश्चित है, बशर्ते वह आपके अंदर आपका वजूद बनकर रहे, उसमें सतहीपन नहीं होना चाहिए।

इन कविताओं के अध्ययन से पता चलता है कि कविता राकेश जी के एकांत की सहचरी है, बेशक वह भीड़ में विचार बनकर आती हो, लेकिन उनका सृजन होता है एकांत में ही। वह लिखते हैं–''समय की अपनी चाल है। देह की अपनी/ जीवन की अपनी गति है। इनके बीच/ तीन भागों में बंटा मैं/ चारों दिशाओं में फैलना चाहता हूँ।''

ऐसी कविताओं के विचार निश्चय ही ध्यान अथवा योग करने से नहीं आते होंगे, बल्कि अचानक ही कुछ घटित होकर ऐसा संयोग/ बनता होगा। कुछ कविताएँ तो जीवन सत्य को इतने खुरदुरे पन से सामने लाती हैं कि, आप सोचते रह जाएँगे ये क्या हुआ। कुछ कविताएँ अचानक से ऐसे अंदर उतरती हैं जैसे कोई तेज रोशनी उतरकर मन के ऐसे हिस्से को दिखा देती है जहाँ हमारी ही चेतना नहीं पहुँच पाती। अर्थ ये है कि राकेश मिश्र की कविताएँ जीवन के उन हिस्से की यात्रा करती है जहाँ हम सामान्यतः नहीं पहुँच पाते। उससे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि, ऐसी संवेदना को व्यक्त करने वाली कविताओं का शिल्प बहुत चमत्कृत करने वाला नहीं है। एकदम प्लेन हैं। देखें–''मेरी तलाश/ वो जड़ है। जिसे जमीन न मिली/ मेरी मंजिल/ वो जमीन है। जो जड़-विहीन है।''

छोटी-छोटी कविताओं में राकेश मिश्र जीवन का वह दृश्य उकेरते हैं जो अतीत की स्मृतियों में कहीं उलझें होते हैं। समय की तेज गति से चलते कदमों को मिलाने के क्रम में अपने अंदर की उस यात्रा से हम वंचित रह जाते हैं जिसे, हम करना तो चाहते हैं लेकिन कर नहीं पाते। देखें ऐसी ही एक कविता–

'अपनी उंगलियाँ/ बाँधकर/ मैंने रोप ली / छटाँक भर जिंदगी/ तो सूरज/बादलों से जा मिला।'

कवि की कल्पना ही कवि को कटघरे में खड़ी करती है। अक्सर कवि को कल्पना में जीने वाला कहकर उसकी गंभीरता पर प्रश्न उठाया जाता है। कल्पना साहित्य का स्थायी तत्व है, उसे कैसे छोड़ा भी जा सकता है, लेकिन कल्पना से जीवन सत्य को बहुत करीब से कैसे देखा जा सकता है, यह राकेश मिश्र की कविताओं से ही पता चलता है। वह कल्पना का प्रयोग की उसी हद तक करते हैं जिस हद तक उसमें यथार्थ बचा रहे–''चमकदार आकर्षणों से/ गुंथी है। जिंदगी/ क्योंकि तुम्हारी ही तरह/ आकर्षक है। हर असंभव लक्ष्य।''

निश्चय ही राकेश मिश्र काव्यशास्त्र के ज्ञाता नहीं हैं। न ही उनकी कविताओं में काव्यशास्त्र के नियम हैं, लेकिन कविता काव्यधर्म निभाना जानती है। कविता में किस मात्रा में रस, रूप, रंग और भावगंध भरना है, वह समझते हैं। उनके बिम्ब तो अद्‌भुत हैं। जिंदगी को नाखून की कठोरता से परिभाषित करते हैं–

''जिंदगी के अगुआ हैं/ नाखून/ नरम अँगुलियों पर / सख्त।''

मैं बहुत विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि हिंदी साहित्य के लिए यह बिम्ब अनूठा ही नहीं नया भी है। जीवन की परिभाषा असीमित और निशब्द है लेकिन जो परिभाषा राकेश जी ने दी है, वह हर उस व्यक्ति की परिभाषा है जो जीवन की उपलब्धियों को अपने संघर्षों से प्राप्त करते हैं। मैं अभी कह रही थी कि कुछ कविताएँ दो पंक्तियों की हैं लेकिन जीवनानुभव के ऐसे विशाल भाव उसमें छिपे हैं जो धार्मिक ग्रंथों में भी असंभव हैं–

''खुशी एक असहज एहसास है। बिजली में बंजारे की नींद की तरह।''

राकेश मिश्र की कविताओं के भाव समाज के जीवन अनुभव से उपजे हैं। उनकी कविताएँ समाज और समय में माथे में खींची हुई वे लकीरें हैं जिसके आप-पार केवल संघर्ष है। उस संघर्ष का कड़ा अनुभव है। उस अनुभव की वेदना है। वही वेदना कविता में बिखर गई है–''जानोगे/क्या होता है। बियाबानों से गुजरना/ जब जिओगे/ अधूरी खुशियों से भरी/ एक पूरी जिंदगी।''

राकेश मिश्र जीवन के चक्र में भागते-दौड़ते हुए भी अपने जड़ से कटना नहीं चाहते हैं। बल्कि गहराई से जुड़े हुए हैं। अपने अतीत को वह अपनी ताकत समझते हैं। जो व्यक्ति संघर्षशील होगा जिसके लिए जीवन की परिभाषा ही नाखून की सख्ती जैसी है, वह अपनी माँ को कैसे भूल सकता है। माँ तो उसकी चेतना की खुराक है, संबल है, प्रेरणा है। इस दौर में जिस तरह से वृद्धा आश्रमों की संख्याएँ बढ़ रही हैं, वह बताती हैं कि, आने वाली पीढियाँ माँ-बाप को लेकर कितनी असंवेदनशील होती जा रही है। राकेश मिश्र उस असंवेदना को संवेदना से जोड़ने का उपक्रम करते हैं। वह माँ के प्रति अपना उद्‌गार इन शब्दों में व्यक्त करते हैं–

''माँ, तुम/ मेरे खारे मटमैले आँसुओं से खिंची/ साफ तस्वीर हो/ मेरी स्वप्निल मुस्कुराहटों की/ एकमात्र दर्शक/ मेरे सपनों ने भेजी हैं/ जितनी भी चिट्ठियाँ / उन सबका पता हो तुम।''

राकेश मिश्र के काव्य-संग्रहों में कविताओं का क्रम इस तरह से होता है जैसे वह स्वयं जीवन की यात्र पर हैं। कुछ कविताएँ जीवन संघर्ष, अमानवीयता, असंवेदनशीलता को अभिव्यक्त करती हैं और अचानक से प्रेम की कविता, माँ-पिता या कोई संबंध उभरकर सामने आ जाता है। होना भी यही चाहिए। जीवन की यात्रा चाहे जितनी जटिल और असंभव हो, प्रेम न हो तो इंसान टूट जाए। प्रेम चाहे जिस रूप में हो, होना चाहिए। ऐसे कितने प्रेमरूपों को राकेश मिश्र कविता में जीते हैं–

''एक नदी हैं/ मेरी आँखें/ जिनके तटों को / छू छू के रह जाती हैं/ तुम्हारी पलकों की छाँव।''

शजिंदगी एक कण है' में वह इसी शीर्षक से एक कविता लिखते हैं–

''जिंदगी/ एक कण है। उपयोग सरल/ समझ मुश्किल है। एक अनंत खोज है। समतल गहराइयों की।''

आप ही कहिए यह किसका अनुभव नहीं है? लेकिन क्या इस अनुभव को इतनी सरलता से हम व्यक्त कर पाते हैं? नहीं, क्योंकि हम जीवन की जटिलता को बहुत तटस्थ होकर जीने लगते हैं, जबकि उसी समय हमें सहज होना होता है।

जैसे ही जीवन की ऐसी कोई जटिलता सामने आती है, प्रेम उनका संबल बन जाता है–

''हवा में/ ढेर सारी नमी बिखेरती हैं/ तुम्हारी अश्रुपूरित आँखें।''

प्रेम ही ऐसा शब्द है जिसकी परिभाषा एक हो ही नहीं सकती है। अपने-अपने अनुभव से व्यक्ति प्रेम को परिभाषित करता है। राकेश मिश्र के यहाँ वह इस रूप में परिभाषित हुई है–

''तुम्हें देखा तो/ लगा/ कैसे कैसे/ सामना किया जाता है। खुशियों का।''

प्रेम का आस-पास होना कितना सुखकर होता है यह भी देखिए–

''तुम रहते हो तोद्धो बूंद नमी ले आती है। हवा/तुम रहते हो तो / आम की महक से सराबोर हो जाती

दिशा / तुम रहती हो तो / जीवन के पास रहती है। दया।''

कहते हैं प्रेम की परिणति ही अपूर्ण होती है। कई बार यह सच भी होता है, लेकिन राकेश मिश्र प्रेम के एक पल में जीवन की पूर्णता स्वीकार कर लेते हैं। आधेपन में भी पूरी जिंदगी को जी लेने का हुनर राकेश मिश्र की कविताओं की सबसे बड़ी ताकत है। आप भी देखें–

''तुम्हीं ने रखी होगी/ आधी यादें/ आधा स्नेह/ आधी रातें/ आधी सुबह/ आधी बातें/ और पूरी जिंदगी।''

मैं पहले भी कह चुकी हूँ कि राकेश जी अपने अतीत से जुड़े हैं। वर्तमान और भविष्य की व्यस्तताओं और कठिनाइयों में एक अतीत की की स्मृतियाँ ही तो हमारी दुखती रगों को सहलाती हैं। राकेश मिश्र को अपना बचपन नहीं भूला है, न बचपन की सहचर वह कौड़ियाँ भूली जिनका कोई वैसे कोई मोल नहीं होता लेकिन उसमें भावना जुड़ जाए तो उसका कोई मूल्य भी नहीं है–

''बचपन में/ मिट्टी में दबाई कौड़ियाँ/ खुदाई में मिलीं/ सहसा आज/ माथे से लगा लिया/ बचपन के अनमोल धन को।''